आजा आजा आजा मां पवन रूप में आजा

आजा आजा आजा मां पवन रूप में आजा
जागरण की रात है मईया अब तो झलक दिखाजा
आजा आजा आजा मां पवन रूप में आजा
आजा आजा आजा मा शेर पे चढ़ कर आजा

मां आध कवांरी आजा
जग पालन हारी आजा
अखियां हैं प्यासी आजा
तेरे बिन उदासी आजा

तेरे भग्तों नें तेरी राह में पलकें आज बिछा दी हैं
भक्ती भाव से अंगना भीतर कलियां मां बिखरा दी हैं
उन कलियों पे पदपकंज की ज़रा सी धूल लगाजा

मां पिंडी रूपा आजा
मां पवन स्वरूपा आजा
कहां देर लगाई आजा
दुर्गा महा माई आजा

मां अपनी निर्दोष दया की यहां भी गंगा बहने दो
साक्षात तेरे रूप को मईया मन की बातें कहने दो
कैसे भव जल पार करें हमें विधी कोई बतलाजा

ऐ वैषणों मैया आजा
नईया की खवैया आजा
है गुफा वासिनी आजा

है पाप नाशिनी आजा ॥